शासक के रूप में चन्द्रगुप्त द्वितीय का मूल्यांकन

Course - M.A. History, Part I; Paper - IV; Prepared by - Dr. S.K. Poddar

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर पहुँच गया। समुद्रगुप्त के पश्चात् गुप्त वंश का सबसे महान् सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय "विक्रमादित्य" ही था। अपने पिता के ही समान वह एक योग्य सेनानी एवं कूटनीतिज्ञ था। संभवतः उसके इन्हीं गुणों से प्रसन्न होकर उसके पिता ने रामगुप्त को गद्दी से च्युत कर दिया था तथा चन्द्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। विशाखदत्त लिखित देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक से ऐसा आभास होता है कि चन्द्रगुप्त ने अपने ज्येष्ठ भ्राता रामगुप्त की हत्या कर गद्दी हथिया ली तथा रामगुप्त की विधवा ध्रुवदेवी से अपना विवाह कर लिया।

उसके राज्यारोहण के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर उसका शासन सन् 375 ई० से 414 ई० तक माना जाता है। उसके राज्यारोहण के समय गुप्त साम्राज्य की अवस्था उतनी सुदृढ़ नहीं रह गयी थी जैसी समुद्रगुप्त के समय में थी। रामगुप्त के विरुद्ध एवं शकों के आक्रमण से अवश्य ही गुप्तों की प्रतिष्ठा धूमिल पड़ गयी थी। अपनी स्थिति को सुधारने के लिए उसने युद्ध एवं मैत्री दोनों का सहारा लिया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए तत्कालीन महत्वपूर्ण शक्तियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध (Matrimonial alliance) कायम किए। सर्वप्रथम उसने नाग-वंश की एक राजकुमारी कुबेर नागा से अपनी शादी की। इससे उसे प्रभावती गुप्त नामक पुत्री की उत्पत्ति हुई जिसका विवाह उसने वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से कर दिया। इन वैवाहिक सम्बन्धों से उसे नागों एवं वाकाटकों की मैत्री

सहज ही प्राप्त हो गयी। नागों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण वाकाटकों से वैवाहिक सम्बन्ध थी। गुप्तकाल में वाकाटक नरेश काफी शक्तिशाली था। यद्यपि समुद्रगुप्त ने वाकाटक नरेश रुद्रसेन को पराजित कर उसे कमजोर बना दिया था फिर भी रुद्रसेन द्वितीय ने मध्य दक्षिणी भारत में अपनी शक्ति काफी बढ़ा ली थी और वह एक महत्वपूर्ण शासक बन गया था। उसका प्रभाव भी ऐसे क्षेत्र में था जहाँ से वह गुजरात और सौराष्ट्र के शक क्षत्रपों के विरुद्ध किसी भी उत्तर भारतीय राजा के अभियान में मदद पहुँचा सकता था। संभवतः चन्द्रगुप्त ने इस स्थिति का अन्दाज कर लिया था और इसीलिए उसने वाकाटक नरेश से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। इस विवाह के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त को बिना कठिन परिश्रम के ही एक महत्वपूर्ण शक्ति की मित्रता प्राप्त हो गयी। इस वैवाहिक सम्बन्ध से उसने कूटनीति का परिचय दिया। इसे 'राजनीति की एक अद्भुत चोट' (masterstroke of diplomacy) कहा गया है।

वाकाटकों के अतिरिक्त चन्द्रगुप्त द्वितीय ने कुन्तल नरेश से भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए। कुन्तल (बम्बई का दक्षिणी तथा मैसूर का उत्तरी भाग) पर कदम्ब वंश के शासकों का अधिकार था। कुन्तलेश्वर के साथ चन्द्रगुप्त द्वितीय के घनिष्ठ सम्बन्ध का प्रमाण उपलब्ध है। महाकवि भोज के शृंगार प्रकाश में कालिदास तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय के बीच कुन्तल के राजा के विषय में बात चीत होने का उल्लेख किया गया है। संभवतः कालिदास को अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त ने कुन्तल शासक के यहाँ भेजा था। तालगुण्डा प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कुन्तल नरेश (संभवतः काकुत्स्यवर्मन) ने

अपनी पुत्री का विवाह गुप्त नरेश से किया था। इस अभिलेख से स्पष्ट है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने कुन्तल नरेश की कन्या से विवाह किया अर्थात् उसके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था। इन वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा चन्द्रगुप्त ने तत्कालीन महत्त्वपूर्ण शासकों को अपना हितैषी बना लिया। इन शासकों की मित्रता ने गुप्त साम्राज्य को भरपूर सुरक्षा प्रदान किया। राजनीतिक दृष्टिकोण से ये सारे विवाह-सम्बन्ध बड़े ही महत्त्वपूर्ण थे। कुछ विद्वानों ने तो चन्द्रगुप्त की विजय अभियानों से भी ज्यादा महत्त्व उसके वैवाहिक सम्बन्धों को ही दिया है।

चन्द्रगुप्त में अपने पिता की ही भाँति सैन्य प्रतिभा विद्यमान थी। उसने अपने पिता की विजयों को और आगे बढ़ाया। उसके शासन काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है पश्चिम तथा उत्तर के प्रदेशों की विजय का अभियान। उसने बल्ख (Bactria) तक अपने राज्य का विस्तार किया और इस प्रकार वह अपने पिता से भी आगे बढ़ गया।

चन्द्रगुप्त ने शकों को पराजित किया। देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक में इस विजय अभियान का उल्लेख किया गया है। चन्द्रगुप्त ने शक-राजा को पराजित कर उसकी हत्या कर डाली। उदयगिरी गुहालेख, सनकानिक महाराज तथा आम्रकार्दव के अभिलेखों से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त ने गुजरात तथा काठियावाड़ के शक शासक (संभवतः रुद्रसिंह तृतीय) पर विजय प्राप्त की तथा पश्चिम की तरफ अपने राज्य का विस्तार किया। इस विजय की स्मृति में ही उसने सिंह विक्रम प्रकार के सिक्के जारी करवाए। उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि भी

संभवतः शकों पर विजय प्राप्त करने के बाद ही चारण की इस विजय के परिणामस्वरूप गुप्तों का अधिकार मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र एवं काठियावाड़ पर हो गया। इसके साथ-साथ गुप्त साम्राज्य की सीमा समुद्री बन्दरगाहों तक पहुँच गयी। इसके चलते सामुद्रिक एवं स्थल मार्गों से व्यापार का विकास हुआ। उज्जैन का व्यापारिक एवं सांस्कृतिक महत्व बढ़ गया तथा यह साम्राज्य की दूसरी राजधानी बन गयी। इसे राजधानी बनाकर चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिज्ञता और चतुराई का परिचय दिया। इस प्रकार शकों पर चन्द्रगुप्त की विजय एक महान् उपलब्धि थी। शकों के मान-मर्दन करने के कारण ही चन्द्रगुप्त द्वितीय को 'शकारि' भी कहा जाता है। उसने अपने पराक्रम और प्रताप से गुप्त साम्राज्य को दृढ़ किया।

समुद्रगुप्त के समय में भी पश्चिमोत्तर भारत में अनेक गणराज्य थे। समुद्रगुप्त ने यद्यपि इन्हें अपना अधीनस्थ शासक बना लिया था परन्तु इनकी शक्ति पूर्णरूपेण नष्ट नहीं हुई थी। इन गणराज्यों के अस्तित्व से साम्राज्य की सुरक्षा को सदैव ही खतरा था, अतः चन्द्रगुप्त ने इनको नष्ट करने की योजना बनायी एवं इनकी स्वतंत्रता को सदैव के लिए समाप्त कर दिया। पश्चिमोत्तर-अभियान में उसने कुषाणों की बची-खुची शक्ति के अवशेषों को भी नष्ट कर दिया। चन्द्रगुप्त के इन कार्यों ने साम्राज्य की स्थिति और अधिक मजबूत कर दी।

चन्द्रगुप्त के विजय अभियानों एवं उसके साम्राज्य विस्तार का पता मेहरौली के अभिलेख से मिलता है। मेहरौली में कुतुबमीनार के निकट खड़ी एक लौह की लाट

पर चन्द्र नामक एक राजा के कारनामों को अभिलिखित किया गया है। राजा "चन्द्र" की सही-सही पहचान अभी भी नहीं हो पायी है परन्तु अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि इस अभिलेख का 'चन्द्र' चन्द्रगुप्त द्वितीय ही था। इस अभिलेख से चन्द्रगुप्त के विजय की पुष्टि होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त ने पश्चिम में बल्ख से लेकर पूर्व में पूर्वी बंगाल और उसके निकट के क्षेत्रों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार भारत से विदेशी शक और कुषाणों के राज्यों को नष्ट कर उसने सम्पूर्ण उत्तरी भारत एवं विदेशों तक अपने राज्य का विस्तार किया। इसीसे उसे विश्व विजेता भी कहा जाता है।

चन्द्रगुप्त सिर्फ एक महान विजेता ही नहीं था बल्कि उसने साम्राज्य के उचित प्रशासन की भी व्यवस्था की। उसकी प्रशासनिक व्यवस्था का अन्दाज उसके मुद्रों एवं अभिलेखों से मिलता है। राजा स्वयं राज्य का प्रधान था। राजकुमारों को प्रान्तीय शासक के रूप में कार्यभार सौंपा जाता था। राज्य के प्रमुख पदाधिकारी निम्नलिखित थे-

~~(1) उपरिक (2) कुमारामात्याधिकरण (3) बलाधिकरण (4) महादंडनायक~~

(1) उपरिक - प्रांतीय शासक,

(2) कुमारामात्याधिकरण - राजकुमार के मंत्री का कार्यालय,

(3) बलाधिकरण - सेनापति का कार्यालय,

(4) रणभाण्डाधिकरण - सेना के कोष का कार्यालय

(5) दंडपाशाधिकरण - पुलिस प्रधान का कार्यालय

(6) महादंडनायक - प्रमुख दण्डाधिकारी (7) विनयस्थिति स्थापक - कानून एवं व्यवस्था का मंत्री (8) महाश्वपति - पैदल तथा घुड़सवार सेना का प्रधान (9) महाप्रतिहार - राजप्रासाद का मुख्य सुरक्षाधिकारी (10) विनयसुर - प्रमुख सेन्सर अधिकारी (11) तलवर - संभवतः स्थानीय अध्यक्ष।

गुप्त साम्राज्य के कुछ क्षेत्रों के ऊपर स्थानीय सामंतों का अधिकार था ये सामंत गुप्त के अधीन शासन करते थे तथा उनके पद वंशानुगत होते थे। उदयगिरी गुहालेख में सामंतों की तीन पीढ़ियों का उल्लेख किया गया है - चगलग, विष्णुदास एवं उसका पुत्र संनकनिक। ये सभी 'महाराज' की उपाधि धारण करते थे।

राज्य के प्रशासकीय विभाग विषय, मुक्ति एवं प्रदेश थे। स्थानीय प्रशासन में खासकर आर्थिक जीवन को नियंत्रित करने में निगम एवं श्रेणी का महत्वपूर्ण योगदान रहता था। अतः स्पष्ट है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सिर्फ एक विशाल साम्राज्य की ही स्थापना नहीं की बल्कि उसके समुचित प्रशासन पर भी पूरा ध्यान दिया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय प्राचीन भारत का एक महान सम्राट था। उसने न सिर्फ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की बल्कि एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की नींव भी डाली। उसके समय में सभ्यता एवं संस्कृति के अन्य पहलुओं की भी प्रगति हुई। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, कला-कौशल, प्रत्येक क्षेत्र में इस समय अभूतपूर्व प्रगति हुई। अगर वास्तव में गुप्त काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण-युग था, तो वह समय चन्द्रगुप्त द्वितीय का ही था। उसके समय में विदेशों से भी सम्पर्क बढ़े। चीनी यात्री फाहियान उसी के समय में भारत आया था। उसने कला-कौशल, साहित्य को प्रश्रय दिया। वह तो स्वयं विष्णु का उपासक था परन्तु वह अन्य धर्मावलंबियों को भी सम्मान की दृष्टि से देखा करता था। ऐसा कहा जाता है कि उसके दरबार में नौरत्न (Nine Jewels) थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जहाँ समुद्रगुप्त ने अपने बाहुबल से सिर्फ एक विशाल साम्राज्य की ही स्थापना कर संतुष्ट हो गया चन्द्रगुप्त ने साम्राज्य की सर्वांगीण उन्नति के लिए भी प्रयत्न किए।